3. सरवी : (कबीर)

भावार्थ :

पहलो सारवी :
ऐसो बाँणी बोलिए , मन का आपा खोई।
अपना तन सीतल , औरन को सुख होई।

भावार्थ :
प्रस्तुत सारवी में संत कबीरदास अहंकार और कटु वचन त्यागने का संदेश देते हुए कहते है कि लोगों को अपने मन का अहंकार त्यागकर ऐसो मीठे वचन बोलने चाहिए , जिससे उनका अपना शरीर शीतल अर्थात् शांत और प्रशन्न हो जाए और साथ ही सुनने वालो को भी उससे सुख मिले । अत : हमें आपस में मीठे बोल बोलकर मधुर व्यवहार करना चाहिए ।

PULAKRAJ PATNAIK

दूसरी साखी :
कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि
ऐसैं घटि - घटि राँम है, दुनिया देखे नाँहि

भावार्थ :
कबीरदास कहते है कि जिस प्रकार कस्तूरी नामक सुगंधित पदार्थ हिरण की अपनी नाभि में ही होता है, किंतु वह उसकी सुगंध महसूस करके उसे पाने के लिए वन - वन मे परेशान होकर भटकता रहता है, ठीक उसी प्रकार ईशवर (राम) भी सृष्टि के कण - कण में तथा सभी प्राणियो के हृदय मे निवास करते हैं, किंतु संसार मे रहने वाले लोग अज्ञानतावश उसे देख नही पाते और परेशान होकर इधर - उधर ढूँढते रहते हैं। इसीलिए हमें ईश्वर को बाहर न खोजकर अपने भीतर ही खोजना चाहिए।

तीसरी सारवी :
जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि नाँहि।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक माँहि।

भावार्थ :
कबीरदास कहते हैं कि जिस समय मेरे अंदर 'मैं' अर्थात अहंकार भरा हुआ था, उस समय मुझे ईश्वर नहीं मिल पा रहे थे। अब जब मुझे ईश्वर के दर्शन हो गए हो। तो मेरे ईश्वर, अहंकार समाप्त हो गया है। जैसे ही मेरा उस ज्योतस्वरूप ज्ञान रूपी दीपक को मन में देखा, तो मेरा सारा अज्ञान रूपी अंधकार समाप्त हो गया तथा मुझे इस सत्य का दर्शन हो गया हैं कि अंधकार ही ईश्वर का शत्रु और घोर विरोधी है।